शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समकालीन हिन्दी कहानी में स्त्री विमर्श

*ज्योति यादव (शोधार्थी)
**डॉ. सीता गौड़ (शोध निर्देशक)
*महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर
**डॉ.बी.आर.ए. राजकीय महाविद्यालय,
श्री गंगा नगर, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

समकालीन साहित्य में नारी जाति का सदियों का मौन मुखरित हुआ है। हिन्दी लेखिकाओं ने कहानी को नारी विमर्श की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बना दिया। यद्यपि यह स्त्री विमर्श पश्चिम के नारीवादी आन्दोलन से प्रभावित है, फिर भी हिंदी में इसे भारती परिप्रेक्ष्य में देखने का प्रयास अनेक साहित्यकारों ने किया है इस विमर्श से अनेक अनछुए पहलू उजागर हुए हैं स्त्री विमर्श में स्त्री और पुरुष के अहम् के टकराव अलावा समाज में स्त्रियों के प्रति व्यवहार का भी चित्रण किया गया है। स्त्री स्वातंत्र्य की चर्चा भी की गयी है। प्रस्तुत शोध पत्र में समकालीन हिंदी कहानी में स्त्री विमर्श पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श मूलतः नई संकल्पना है। नारी विमर्श वस्तुतः नारी को व्यक्ति के अलावा मानव के रूप में देखने की अपेक्षा करता है, जिसमें न लिंग भेद के लिए स्थान है और न वर्चस्व के लिए। "स्त्री का व्यक्ति के रूप में प्रकाशित हो सकना, अपनी सम्पूर्णता में जी सकना, मनुष्य जाति के बचे रहने की शर्त है। यह अकारण नहीं है कि इला भट्ट जैसी स्त्री चिन्तक स्त्री मुक्ति के रास्ते मानव जाति की मुक्ति का सपना देख रही है। "स्त्री विमर्श में स्त्री के मनुष्यत्व को स्वीकारना सबसे बड़ा प्रश्न है।" स्त्री विमर्श ने यह स्पष्ट किया है कि स्त्री का दमन पितृ सत्तात्मक परिवारों की मूल्य व्यवस्था ने ही किया है। सार्वजनिक क्षेत्र में स्त्री का स्तर कुछ भी क्यों न रहा हो, लेकिन परिवार में आते ही वह दमन का शिकार होने लगती है। इसलिए परिवार स्त्री के लिए खुली दासता है, जो उसकी रचनात्मक, बौद्धिक शक्ति को नष्ट करता है। क्या यही हमारे पारिवारिक मूल्य है, इन प्रश्नों के प्रति हमारी इतनी असंवेदनशीलता क्यों रही है। स्त्री विमर्श में ऐसे अन्तर्विरोधों की तीखी एवं गहरी समझ का जबरदस्त प्रतिरोध उनके लेखन में तीखी प्रश्नानुकूलता, तार्किकता संवाद करने की अद्भुत ताकत में व्यक्त होती है आज तक समूचा साहित्य इसलिए अधूरा है, क्योंकि उसमें दुनिया की आधी आबादी की मुक्ति से जुड़े हुए प्रश्न नहीं हैं। अतः वह साहित्य मानवीय कैसे हो सकता है जो आधी दुनिया का साहित्य रहा हो और जिसमें स्त्री की स्थिति दोयम दर्जे की रही हो। इसलिए पितृसत्तात्मक समाज उसे शील, नैतिकता, मर्यादा जैसे आदर्शो से उसे अनुशासित करता रहता है। स्त्री विमर्श ने इस स्थिति को बदलने के लिए उन निरंकुश मूल्यों को जाँचने,परखने का जोखिम उठाया है जो उसे निरतंर अनुशासित करते, अधीन बनाते

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आवाजहीन और अस्मिताहीन लगते हैं। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन है जिसमें स्त्री लेखिकाएँ अपनी स्थितियों, अवस्थाओं को समझने लगी हैं कि कैसे उनके बढते कदमों को अवरूद्ध किया जा रहा है। क्यों वे नियंत्रित, निर्धारित अनुकूलित, पारिभाषित की जाती रही हैं। जो लोग ऐसे परिर्वतनों को अपने हितों के विरूद्ध पाते हैं, जिनकी सोच वर्चस्ववादी है तथा जो दूसरों पर अपना प्रभुत्व जमाना चाहते हैं, वे स्त्रियों के स्वतंत्र विकास के परम विरोधी इसलिए हैं. क्योंकि वे नहीं चाहते कि उनका वर्चस्व टूटे तथा दलित स्त्रियाँ अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें। स्त्री विमर्श इसी अस्मिता के लिए संघर्षरत है, लेकिन उनके बढ़ते कदमों को रोकने वाली प्रतिगामी शक्तियाँ भी चिंतित एवं सक्रिय हैं, ताकि इस परिर्वतनकारी मानवीय प्रक्रिया को अवरूद्ध किया जा सके। कोण्डे पुड़ी निर्मला का कहना बिल्कुल सही है कि "भोपाल गैस त्रासदी में मरे हुए चक्रवात का शिकार हुए लोगों की संख्या बतायी जा सकती है, लेकिन हमारी संस्कृति की मजबूत पकड़ के नीचे प्रताड़ित शोषित स्त्रियों के आंसुओं को गिन पाने के लिए कोई तराजू नहीं है।...जब तक स्त्री की अपनी विचारधारा और प्रगति पर नियंत्रण बना हुआ है, तब तक हमें हमारी जैविक और मानसिक जरूरतों और समस्याओं को खुले रूप में व्यक्त करते रहना होगा। स्त्री विमर्श को हमारा समाज गंभीरता से इसलिए भी नहीं ले रहा, क्योंकि इसके पीछे भी परिवार (पितृसत्तात्मक) के असुरक्षित हो जाने की भावना छिपी होती है। असुरक्षा की इस भावना को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए और न ही विकसित होती नारीवादी चेतना की धारणाओं को कुचला जाना चाहिए।" विश्व चिन्तन में स्त्री विमर्श ने जिन ज्वलन्त प्रश्नों, मुद्दों को रेखांकित किया है उन पर विचार किए बिना हम स्त्री विमर्श की सार्थकता को नहीं पहचान सकते।

कहानियों में स्त्री विमर्श

मंजुल भगत की 'झरोखे से मुंडेर तक' कहानी एक शोषित, दरिद्र और कुण्ठित नारी केसरी की कहानी है। यहां दरिद्रताजन्य शोषण दोहरा है, जहाँ पति मासूम बच्चों के लालन-पालन की चिन्ता में घुलती नारी को आर्थिक निर्भरता के लिए महरी का काम भी नहीं करने देता। निठल्ले पति रामा का तर्क है, "खबरदार! हम हैं ठाकुर, समझी ? तु यहाँ गाँव में हमें दण्ड नहीं भरना पडेगा ? पंचेत को नगदी देनी होगी और पूरी बिरादरी को जिमाना पडेगा। खबरदार जो चौखट के बाहर पाँव धरा तो ? औरत वो जिस चाँद और सूरज भी न देखे। यह तथाकथित जात्याभिमान और स्त्री को परदे में रखने की प्रवृति आज भी ग्रामीण व अशिक्षित समाज में जिन्दा है।

नारी की चेतना अपने अस्तित्व को स्थापित करने के लिए संधर्ष कर रही है। मन्नू भण्डारी की 'रानी माँ का चबुतरा' कहानी की गुलाबी एक विधवा स्त्री के संघर्ष को प्रस्तुत करती है। समाज कैसा है कि जो दयनीय है, निरीह है, उन्हें निन्दा का पात्र बनाता है। आस-पास के लोग गुलाबी को चुडैल कहते हैं। कर्कशा और बुरी आदतों वाली मानते हैं, जबकी सत्यता इसके विपरीत है। वह तो बेचारी व्यथाग्रस्ता है। स्वाभिमानी गुलाबी दया दिखाने वालों के प्रति अपने आक्रोश को प्रकट करती हुई करती है। "हम क्या भिखमंगे हैं जो किसी का दिया पहनेंगे थू है उन पर। बड़े आये हैं दया दिखाने वाले। "आज हर नारी इसी तरह जूझ रही है। इस प्रकार स्त्री प्राचीनरूढ़ परम्पराओं का सामना करती है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

स्त्री विमर्श की कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। वह जब आत्मनिर्भर होने के लिए नौकरी करती है तो उसे वहाँ भी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। स्त्री और पुरूष दोंनो ही शिक्षित होकर उच्च पद पाना चाहते हैं। स्त्रियाँ विवाह उपरान्त अपनी शिक्षा और कैरियर को बढ़ाने का प्रयत्न करती है तो उन्हें कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पडता है। 'नई नौकरी' की रमा अपनी नौकरी को दूसरे पायदान पर रखती है, जबकि पति की पदोन्नति पहले पायदान पर। पति चाहता है कि विदेशी कम्पनी से मिले फ्लैट को पत्नी नये ढंग से सजाये, बच्चे पर पूरा ध्यान दे। दूसरी ओर रमा अपने कैरियर को लेकर चिन्तित है। "दस साल पूरे हुये छः आठ महीने में भी अपनी थीसिस सब्मिट कर देती तो मेरा सिलेक्शन ग्रेड में आना निश्चित ही था पर ऐसी हालत रही है।" इस प्रकार दायित्वों का यह बोझ पति-पत्नी के बीच आपसी संघर्ष का कारण बनता है। चित्रा मुदगल नारी को मानवी मानने के पक्ष में है। वह मात्र उपभोग की वस्तु नहीं है वरना उसकी भी अपनी एक स्वतंत्र सत्ता है स्वतंत्र सत्ता के लिये आर्थिक स्वावलम्बन अनिवार्य है। इस स्वावलम्बन को बनाये रखने के लिए स्त्री किस प्रकार संघर्ष कर रही है और इस संघर्ष के कारण ही उसमें आत्मविश्वास आया है। चित्रा मुद्ल के कहानी संग्रह 'मेरी रचना प्रकिया' में कहानी की नायिका का आत्मविश्वास इसका उदाहरण प्रस्तुत करता है। "वह वही करेगी जो करना चाहती है न वह सोच गिरवी रख सकती है न मस्तिक न भावनाएँ न विचार न दृष्टि।" इस प्रकार नारी के आत्मविश्वास ने परिस्थितियों का सामना करने के लिए प्रेरित किया है।

इस संबंध में डॉ. भगवान दास वर्मा कहते हैं - "आधुनिक शिक्षित नारी आर्थिक दृष्टि से परावलम्बी न होकर भी पुरूष की आश्रित है। पुरूष के साथ उसकी जिन्दगी में कुछ ऐसे क्षण आते हैं, जब उसे बडी भयंकर स्थिति का सामना करना पड़ता है। ऐसे समय में एक ओर अपनी स्वंत्रत दृष्टि के कारण वह न तो किसी की आश्रित बनकर रहना चाहती है न रहने दी जाती है। ऐसे समय में कई बार वह बड़ी निर्ममता से सम्बन्ध -विच्छेद करते हुए नहीं घबरती है। यह सब यहाँ तक तो ठीक है, किन्तु इसके बाद की कई ऐसी समस्याएँ उसके सामने होती है, जिनसे जूझना उसके लिए असम्भव तो नहीं, कठिन जरूर हो जाता है। शायद आधुनिक नारी की यही नियति है। उसका स्वावलम्बी होना ही उसके लिए अभिशाप है।" आत्मनिर्भर बनने के लिए आज नारी उच्च से उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करती है, किन्तु कभी-कभी ऐसा भी होता है कि यह उच्च शिक्षा ही उसके विवाह व भविष्य के सुख में बाधक बन जाती है। वर्तमान जीवन की यह बहुत बडी विकृति हमारे सामाजिक ढाँचे में प्रविष्ट प्रकिया हो गयी है कि उच्च शिक्षा के कारण कभी -कभी लड़की के विवाह की समस्या विकराल रूप धारण कर लेती है। कृष्णा अग्निहोत्री की कहानी 'विडम्बना' नारी के इसी संघर्ष को दर्शाती है। "जहाँ भी नमिता की पुत्री पारूल की बातचीत चलती है। वहाँ लड़की के उच्च शिक्षा के कारण ही शादी टूट जाती है।" इस प्रकार उच्च शिक्षित नारी भी समाज की रूढ परम्पराओं की बलि चढ़ जाती है।

निष्कर्ष

समकालीन कथाकारों की कहानियों का अध्ययन करने के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि किस प्रकार स्त्री विमर्श के अन्तर्गत स्त्री के अनुभव को वाणी मिल रही है। सभी का उद्देश्य नारी की अस्मिता को बनाये रखना है। नारी का संरक्षण

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

समाज का दायित्व है। पर जब समाज इस दायित्व से पीछे हटता है तब त्रुटियाँ उत्पन होती हैं। त्रुटि वहीं पैदा होती है जहाँ जागरण के साथ दिशा-भ्रम आकर जुड़ जाता है। पुराने मूल्य नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं और नए मूल्यों के निर्माण की रूपरेखा ही नहीं बन पाती है। समकालीन कहानी तमाम सामाजिक समस्याओं से टकराती हुई विमर्श का सूत्रपात करती है। यदि अब भी कुछ न किया गया तो हमारे समाज की जो नैतिक एवं सांस्कृतिक अवनति हो रही है, वह दिन-पर-दिन बढ़ती जाएगी, क्योंकि आज का पुरूष वर्ग नारी की अस्मिता, आवश्यकता एवं अनिवार्यता को पूरा नहीं करना चाहता है। वह अपने अहं की तुष्टि के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहता है। स्त्री व पुरूष एक दूसरे के साथी हैं, सहयोगी हैं। फिर एक पक्ष की इतनी उपेक्षा क्यों? नारी अपने अस्तित्व को बनाये रखे। भारतीय संस्कृति के मूल सत्य को पहचाने वह स्त्रीयोचित गुणों द्वारा संस्कृति व समाज की रक्षा करे तथा बौद्धिक स्तर पर विकास करें । वास्तव में यही नारी का सच्चा विमर्श कहलाएगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 ज्योत्सना मिलन, पूर्वाग्रह 101, पृष्ठ 58

2 कोपड़े पुड़ी निर्मला, पूर्वग्रह 104, आपका जवाब क्या है ? पृष्ठ 98-99

3 वहीं, पृष्ठ 99

4 मंजुल भगत : समग्र कथा-साहित्य, झरोखे से मुंडेर तक : कमल किशोर गोयनका, पृष्ठ 256

5 यही सच है, मन्नू भण्डारी (रानी मां का चबूतरा), पृष्ठ 16

6 नई कहानीःकाव्य और शिल्प, डॉ. सन्तबख्श सिंह पृष्ठ 120-121

7 आधुनिक समाज की नारी चेतना, डॉ. सुशील वर्मा, पृष्ठ 90

8 चित्रा मुद्गल, मेरी रचना प्रक्रिया (जगदम्बा बाबू गांव आ रहे हैं कहानी संग्रह से) पृष्ठ 9

9 समकालीन कहानी : रचना, पुष्पपाल सिंह पृष्ठ 73

10 वही, पृष्ठ 75